HANSA MEHTA LIBRARY
The M. S. University of Baroda

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा
की पीएच. डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत

गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा सम्पादित ब्रजभाषा काव्य पांडुलिपियों का अनुशीलन

F.W.C.

की

Professor & Head,
Deptt. of Hindi
Faculty of Arts
M. S. U., Baroda,
27-2-2001

संक्षिप्त रूपरेखा

शोधार्थी

दिनेश सिंह एन. यादव

निर्देशक
डॉ. विष्णु चतुर्वेदी

V. Chaturvedi
(Guiding Teacher)

रीडर, हिन्दी विभाग, म.स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा

(फरवरी - २००१)

" विषयानुक्रमणिका "

प्रथम अध्याय : गोविन्द गिल्लाभाई ; व्यक्तित्व परिचय

द्वितीय अध्याय : गोविन्द गिल्लाभाई का साहित्य प्रदान

तृतीय अध्याय : गोविन्द गिल्लाभाई की सम्पादन कला

चतुर्थ अध्याय : प्रमुख साहित्य कृतियों का सम्पादन

पंचम् अध्याय : प्रमुख संग्रह ग्रन्थों का सम्पादन

षष्ठ अध्याय : साहित्य की समालोचना

सप्तमअध्याय : मूल्यांकन उपसंहार

परिशिष्ट

शोध - प्रबंध - सार

गुजरात की धरती हिन्दी सृजन के लिए सदैव से उर्वरा रही है, इसके अनेक भौगोलिक, राजनीतिक एवं सामाजिक आधार रहे है, सांस्कृतिक दृष्टि से भी यह ब्रज संस्कृति से सम्प्रक्त वैष्णव भक्ति में सराबोर रही है । द्वारकापुरी में श्रीकृष्ण भक्ति का केन्द्र स्थापित होने से व्रज संस्कृति और ब्रजभाषा का यहाँ प्रभुत्व स्थापित हुआ। श्रीकृष्ण के साथ साथ यहाँ व्रजवासीगण और ब्रजसाहित्य भी आ गया । ब्रजसाहित्य के लालित्य ने यहाँ के रसिक समुदाय को विमुग्ध कर दिया और कीर्तन भजन के द्वारा ब्रजसाहित्य का यहाँ प्रसार होने लगा ।

वैसे भी मध्यकाल में ब्रजभाषा राष्ट्रीय स्तर पर काव्य की मानद भाषा के रूप में सर्व स्वीकार्य थी। हिन्दी क्षेत्रों के अतिरिक्त गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, बंगाल, उड़ीसा, पंजाब, जैसे क्षेत्रों में हिन्दी का वर्चस्व स्थापित था तथा व्रजभाषा काव्य के प्रति सर्वत्र सम्मोहन भी था । गुजरात के भक्त समुदाय की संवेदनात्मक कोमल भावधारा में ब्रज से उठी ब्रजभाषा की रसमयी झंकार ने जो रंग घोला वह बहुत समय तक बना रहा ।

से प्रेरणा ग्रहण करके कृष्ण लीला का बखान किया है। इसमें रुक्मणी हरण, दानलीला, बाललीला, अक्रूरलीला, गोकुल लीला, द्वारका लीला आदि के कथ्य को पदों,साहित्यों, भजनों एवं कीर्तनों में गाया गया है ।

उन्नीसवीं शताब्दी में यहाँ चारण-भाटों के द्वारा ब्रजभाषा कविता को दरबारों में सम्मानित कराया गया। ब्रजभाषा काव्य के प्रतिकुलीन और राजदरबारी रूझान को देखकर आम लोगों में भी ब्रजभाषा के प्रति रूझान पैदा हुआ, और ब्रजकाव्य को पढ़ने समझने की ललक भी पैदा हुई । इसी आवश्यकता का अनुभव करके कच्छ के महाराजा लखपतसिंह ने कच्छ में ब्रजभाषा काव्य पाठशाला की स्थापना की जिसमें प्रथम कुलपति जैन आचार्य भट्टारक कनककुशल थे, इन्हीं के मेधावी विद्वान शिष्य कुँवर कुशल ने उत्तराधिकारी बन कर ब्रजभाषा पाठशाला का आचार्यत्व ग्रहण किया और कालयजी कृति "लखपति जससिंधु" लिखकर गुजरात की लक्षणग्रंथ रचना की परम्परा को ओजस्विता प्रदान की ।

ब्रजभाषा के इसी रूझान ने काठियावाड़ के सिंहोर गाँव के निवासी आचार्य कवि गोविन्द गिल्लाभाई को प्रभावित किया, राजदरबार में इनके पिता दीवान थे तथा इनकी भेंट राजपरिवार के सदस्यों, आगन्तुक अतिथियों एवं विद्वान कलाकारो से होती रहती थी ।

गोविन्द गिल्लाभाई अपने समय के सर्वाधिक सक्षम, समर्थ और प्रतिभावान आचार्य कवि थे। जिन्होंने गुजराती भाषी होते हुए भी हिन्दी क्षेत्र के वरिष्ठ कवियों की पंक्ति में अपना नाम संलग्न कराया ।

गोविन्द गिल्लाभाई एक अध्यवसायी विद्वान साहित्यकार थे । इनके अनेक रूप सामने आते हैं । लक्षण ग्रंथकार के रुप में, श्रृगार एवं भक्तिपरक काव्य रचनाकार के रूप में, विवेचक के रूप में, कर्ता के रूप में, इतिहास लेखक के रूप में, सम्पादक के रूप में तथा अन्वेषक शोधार्थी के रूप में । इससे पहले इनके आचार्यत्व पर अध्ययन किया जा चुका है। इनके स्वयं के कृतित्व को विवेचित किया जा चुका है किंतु इनके द्वारा महत्वपूर्ण संकलित तथा सम्पादित साहित्यको मूल्यांकित नहीं किया गया ।

ब्रजभाषा काव्य के प्रति मेरी रूचि प्रारंभ से ही रही है। प्रारंभ मे रसखान के सवैये,सूर के पद, मीरा के भजन मुझे आकर्षित करते थे । स्नातकोत्तर अध्ययन में मध्यकालीन साहित्य के पाठयक्रम में ब्रजभाषा के लालत्यि का मुझे

अनुभव हुआ और मैंनें तभी तय कर लिया था कि एम.ए. के उपरान्त मैं ब्रजभाषा काव्य को लेकर ही शोधकार्य सम्पन्न करुँगा ।

जब मैंने अनुभव किया कि गुजरात के वरिष्ठ कवियों में गोविन्द गिल्लाभाई का सम्पादित कार्य अभी अछूता पड़ा है और अत्यन्त महत्व का है, तो मैंने इसी विषय पर अपना शोध प्रबंध लिखने का निश्चय कर लिया ।

संयोग और सौभाग्य से ब्रजभाषा साहित्य के सर्जक एवं अधिकारी विद्वान डॉ.विष्णु चतुर्वेदी का मार्गदर्शन भी मुझे सुलभ हो गया जिससे मेरा कार्य और भी सुगम हो गया ।

गुजरात के हिन्दी साहित्य तथा ब्रजभाषा काव्य की महत्ता को ज्ञापित करने वाले अनेक शोधार्थी अन्वेषक विद्वानों ने इस विषय पर कार्य किया है। डॉ. अम्बाशंकर नागर, कुँवर चन्द्रप्रताप सिंह डॉ.महोब्बतसिंह चौहान, डॉ. मालारविन्दम्, डॉ. रमणलाल पाठक, डॉ. दयाशंकर शुक्ल, डॉ. निर्मला असनानी, डॉ. के. एम. शाह, डॉ. रानूमुखर्जी, डॉ.गोवर्द्धन शर्मा, डॉ. शशि अरोरा, डॉ. किशोर काबरा प्रभृति विद्वानों ने विभिन्न दृष्टियों से इस विषय पर दृष्टिपात किया है। विभिन्न गुजराती विद्वानों ने भी इस दिशा में अपने प्रयास जारी रखे हैं। गुजरात में अनेक ग्रंथागारों, पुस्तकालय वाचनालयों, जैन देरासरों, मंदिरों हवेलियों तथा शिक्षण संस्थाओ में हजारो हिन्दी की हस्तलिखित पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं । अनेक राजघरानों तथा धर्माचार्यो के उत्तराधिकारियों एवं साहित्यकारों के वंशजों के पास उनके निजी ग्रंथ संग्रह है, जिनमें इस प्रकार के हस्तलिखित ग्रंथ उपलब्ध है । इन सभी ग्रंथो में ब्रजभाषा साहित्य के ग्रंथो का परिमाण सर्वोपरि है ।

गोविन्द गिल्लाभाई के अधिकांश साहित्य ग्रंथ आचार्य कुँवर चन्द्रप्रतापसिंह के सद्प्रयासों से महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा के हिन्दी विभाग में संग्रहीत किये गए, जो बाद में प्राच्य विद्यापीठ में स्थानान्तरित कर दिए गए और अधावधि वहाँ सुरक्षित हैं।

मैंने अपने अध्यन काल में जाना कि गोविन्द गिल्लाभाई का स्वयं का कृतित्व जितना महत्वपूर्ण है उतना ही महत्वपूर्ण उनके द्वारा सम्पादित साहित्य है जो उनके जीवनभर के सदप्रयासों एवं कठिन परिश्रम द्वारा संकलित किया गया है। मैंने इस सम्पादन कार्य के परिमाण एवं इसकी महत्ता को देखकर इसी विषयपर शोध प्रबंध सम्पन्न करने का निश्चय कर लिया ।

प्रारूप में निश्चय कीया गया कि प्रबंध को सातमुख्य अध्यायों में वर्गीकृत किया जाए और पूर्वनिधारण अनुरूप यही किया भी गया ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के **प्रथम अध्याय** में आचार्य कवि गोविन्द गिल्लाभाई के जीवनवृत को प्रस्तृत किया गया हैं। जन्म, परिवार, शिक्षा, व्यवसाय,सम्पर्क तथा मुख्य घटनाओं का आकलन इस अध्याय में किया गया है ।

द्वितीय अध्याय में गोविन्द गिल्लाभाई के समग्र साहित्य का विवरणात्मक विश्लेषण तथा परिचयात्मक वृत प्रस्तुत किया गया है। इसमें कवि के मूल लेखन के अतिरिक्त उसकी अनूदित रचनाएँ, गुजराती रचनाएँ, इतिहास, ग्रंथ, संकलित साहित्य, संग्रहीत साहित्य एवं सम्पादित साहित्य का भी परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

तृतीय अध्याय में गुजरात के ब्रजभाषा सम्पादित साहित्य की पृष्ठभूमि स्पष्ट की गई है । इस में आधिकारिक विद्वानों के मंतव्य को आधार बनाकर गुजरात में व्याप्त तथा सृजित ब्रजभाषा के सम्पादित साहित्य का लेखा जोखा तथा उसकी प्राथमिक जानकारी प्रस्तुत की है ।

चतुर्थ अध्याय में गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा सम्पादित साहित्य का पूर्ण परिचय दिया गया है । इसमें सम्पादित ग्रंथो का विवरण, कवि का परिचय, पांडुलिपियों के प्राप्त करने के स्त्रोत एवं प्रयासों की चर्चा के साथ सम्पादित ग्रंथो के विभिन्न संस्करणो एवं स्वरूपों की भी चर्चा की गई है ।

पंचम अध्याय में इसी सम्पादन कार्य को विश्लेषित करते हुए इसकी विशिष्टता को ज्ञापित किया गया है । सम्पादन कला की बारीकियों को सामने रखते हुए संग्रह, संकलन, सम्पादन आदि के स्वरूपों को भी स्पष्ट किया गया है ।

षष्ठ अध्याय में गोविन्द गिल्लाभाई के सम्पादित ग्रंथो की महत्ता के साथ साथ उनकी सम्पादन कला की विशिष्टता को भी रेखांकित किया गया है । इस अध्याय में गोविन्द गिल्लाभाई के समग्र सम्पादन कार्य की महत्ता ज्ञापित की गई है । उसका वैशिष्ट्य स्पष्ट किया गया है ।

सप्तम् अध्याय में सम्पादन कार्य का मूल्यांकन तथा अध्ययन की उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए प्रस्तुत प्रबंध की मौलिकता तथा अभिनवता को भी स्पष्ट किया गयाहै ।

अन्त में संदर्भ ग्रंथादि के लिए **परिशिष्ट** दिया गया है ।

अपने अनुसंधान कार्य को सम्पन्न कराने में मेरे मार्गदर्शक डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी, हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो. पी.के. देसाई, हिन्दी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. पी.एन. झा तथा डॉ. ए.के. गोस्वामी का सहयोग और प्रोत्साहन मुझे मिलता रहा है, मैं ह्रदय से इनका आभार व्यक्त करता हूँ ।

यदि मेरे पूज्य पिताजी श्री नरेन्द्रसिंह यादव का शुभाशीष तथा आत्मीय आग्रह न मिलता तो सम्भवत: मैं यह शोधकार्य सम्पन्न नही कर पाता, उनके प्रति तो मैं अपनी श्रध्धा ही व्यक्त कर सकता हूँ।

इस शोध प्रबंध के निबंधन में जिन महानुभावों, विद्वानों, कलाकारों विवेचकों एवं अध्यापकों तथा आत्मीयजनों का प्रत्यक्ष वा परोक्ष सहयोग मिला है , मैं उनका ह्रदय से आभार व्यकत करता हूँ ।

विनीत

दिनेश सिंह यादव

(शोधार्थी)